

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

ART AND CULTURE OF RAJASTHAN



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

RAS / RPSC EXAM



REET



Police / SI



VDO



CET



LDC / Clerk



Lab Assistant

★ ★ ALL EXAMS ★ ★

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

ART AND CULTURE OF RAJASTHAN

एक सम्पूर्ण, सरल और परीक्षा-उपयोगी पुस्तक

★ इस पुस्तक में शामिल अध्याय ★



वास्तुकला परंपरा: मंदिर, दुर्ग, महल



स्मारक, जलाशय एवं विरासत स्थल



चित्रकला शैलियाँ एवं हस्तशिल्प



लोक नृत्य एवं लोक नाट्य



संगीत: शास्त्रीय, लोक एवं वाद्य यंत्र



राजस्थानी भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य



लोक साहित्य, लोक कथाएँ एवं गाथाएँ



धार्मिक जीवन: संप्रदाय एवं संत



लोक देवता, लोक देवियाँ
एवं धार्मिक प्रथाएँ



मेले एवं त्योहार



सामाजिक जीवन: रीति-रिवाज,
वेशभूषा, आभूषण



जनजातियाँ एवं परंपराएँ



राजस्थान की प्रमुख विभूतियाँ



सरल भाषा में
सम्पूर्ण कवरेज



परीक्षा की दृष्टि से
महत्वपूर्ण बिंदु



चार्ट, चित्र और
उदाहरण सहित



पूर्व परीक्षा प्रश्न
समाहित



सभी प्रतियोगी
परीक्षाओं के लिए
उपयोगी

By
OMKAR SIR

★ ★ ★
राजस्थान GK का
अंतिम व श्रेष्ठ
सहायक

विषय-सूची (Index) — इस अध्याय में क्या पढ़ेंगे?

1. राजस्थान की कला एवं संस्कृति — परिचय एवं महत्व (Why This Subject Matters)
2. यह पुस्तक किन-किन परीक्षाओं के लिए उपयोगी है (Exam Coverage)
3. विषय के प्रमुख आयाम — संरचना एक नज़र में (Broad Dimensions of the Subject)
4. अध्ययन के प्रमुख स्रोत — संक्षिप्त परिचय (Sources — A Preview)
5. पुस्तक की रूपरेखा — 13 अध्याय (Book Roadmap)
6. पुस्तक को कैसे पढ़ें — Study Strategy एवं प्रतीक-चिन्ह सूची (Symbol Legend)
7. लेखक की ओर से (From the Author)

कल्पना कीजिए — एक ऐसी धरती जहाँ हर हाथ में कोई न कोई कला बसती है: कोई पत्थर तराश कर मंदिर गढ़ रहा है, कोई कपड़े पर बंधेज बांध रहा है, कोई रात को थार के रेत पर बैठकर संगीत गा रहा है, तो कोई गाँव की चौपाल में तेजाजी की गाथा सुना रहा है। यही है राजस्थान — जहाँ कला जीवन से अलग कोई चीज़ नहीं, बल्कि जीवन जीने का ही एक तरीका है। "राजस्थान की कला एवं संस्कृति" इसी जीवंत विरासत को समझने और परीक्षा की दृष्टि से व्यवस्थित करने का प्रयास है। और यही वजह है कि चाहे आप RAS की तैयारी कर रहे हों या REET, पटवारी, VDO, पुलिस, 1st/2nd ग्रेड अध्यापक अथवा किसी भी अन्य राजस्थान-स्तरीय परीक्षा की — यह विषय आपका पीछा नहीं छोड़ेगा। यह पुस्तक इसी विषय को गहराई से, सरल भाषा में और हर स्तर की परीक्षा के अनुरूप समझाने के लिए तैयार की गई है।

1. राजस्थान की कला एवं संस्कृति — परिचय एवं महत्व

A. यह विषय इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

- ♦ राज्य की पहचान का आधार: वास्तुकला, चित्रकला, वेशभूषा, लोक-कला और संगीत — सब इसी विषय से जुड़े हैं और राजस्थान की वैश्विक पहचान बनाते हैं।
- ♦ परीक्षा में सर्वव्यापी उपस्थिति: लगभग हर राजस्थान-स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा के सामान्य ज्ञान खंड में यह विषय किसी न किसी रूप में अवश्य आता है।
- ♦ इतिहास एवं भूगोल से जुड़ाव: हर दुर्ग-महल किसी राजवंश-काल से जुड़ा है, हर मेला किसी जिले-नदी से — इतिहास व भूगोल की समझ के बिना यह विषय अधूरा रहता है।
- ♦ करंट अफेयर्स से सीधा संबंध: नए GI Tag, UNESCO सूची में शामिल कलाएं-किले, नई heritage listing, मेलों की नई तारीखें — ये सभी इसी आधार-ज्ञान से जुड़े होते हैं।
- ♦ उत्तर-लेखन में मजबूती: RAS Mains जैसी वर्णनात्मक परीक्षाओं में सांस्कृतिक उदाहरण और तथ्य उत्तर को प्रभावी बनाते हैं।

जब कोई परीक्षा में पूछे — "कालबेलिया नृत्य को UNESCO ने किस सूची में शामिल किया?" — तो यह सवाल कला, इतिहास और करंट अफेयर्स तीनों को एक साथ छूता है। यही कारण है कि यह विषय हर परीक्षा में बार-बार लौटकर आता है, चाहे प्रश्न-पत्र का नाम कुछ भी हो।

2. यह पुस्तक किन-किन परीक्षाओं के लिए है (Exam Coverage)

यह पुस्तक इस तरह तैयार की गई है कि सामग्री RAS Pre एवं Mains (नया 2026 पैटर्न — केवल 5-अंक व 10-अंक प्रश्न) जितनी गहराई से भी लिखी जाए, वही सामग्री REET, RPSC 1st/2nd Grade अध्यापक, पटवारी, VDO/ग्राम सेवक, राजस्थान पुलिस, LDC तथा अन्य समस्त RPSC/RSMSSB परीक्षाओं के लिए भी उतनी ही उपयोगी रहे। नीचे दी तालिका बताती है कि यह विषय किन प्रमुख परीक्षाओं में और किस स्तर पर पूछा जाता है —

परीक्षा (Exam)	संचालक संस्था (Body)	राजस्थान कला-संस्कृति का महत्व
RAS Pre + RAS Mains (Paper-1)	RPSC (राजस्थान लोक सेवा आयोग)	Pre में सीधे तथ्यात्मक MCQ + Mains में 5/10-अंक वर्णनात्मक प्रश्न — सर्वाधिक गहराई आवश्यक ★★★★★
1st Grade School Lecturer (Paper-1, GK)	RPSC	कला-संस्कृति एक प्रमुख भाग, विस्तृत एवं वर्णनात्मक समझ आवश्यक ★★★★★
2nd Grade Senior Teacher (GK Paper)	RPSC / RSMSSB	सामान्य ज्ञान पेपर में प्रमुख भाग के रूप में शामिल ★★★★★
पटवारी (Patwari)	RSMSSB	सामान्य ज्ञान खंड में नियमित रूप से पूछा जाता है ★★★★★
VDO / ग्राम विकास अधिकारी	RSMSSB	History & Culture खंड में अलग भाग के रूप में शामिल ★★★★★
REET Level-1 / Level-2 (EVS/Social Studies)	RSMSSB / शिक्षा विभाग	सामाजिक अध्ययन खंड में मेले-त्यौहार, लोक कला, लोक देवता के तथ्य पूछे जाते हैं ★★★
राजस्थान पुलिस कांस्टेबल / SI	राजस्थान पुलिस विभाग / RPSC	सामान्य ज्ञान खंड में अनिवार्य रूप से शामिल ★★★
LDC / कनिष्ठ सहायक	RSMSSB	सामान्य ज्ञान खंड में नियमित रूप से प्रश्न आते हैं ★★★
अन्य RPSC/RSMSSB परीक्षाएं (High Court, Forest Guard, Tax Assistant आदि)	RPSC / RSMSSB	लगभग सभी में राजस्थान सामान्य ज्ञान अनिवार्य भाग के रूप में शामिल ★★★

3. विषय के प्रमुख आयाम — संरचना एक नज़र में

राजस्थान का इतिहास कालक्रम (timeline) में चलता है, जबकि कला एवं संस्कृति विषय को समझने का सबसे आसान तरीका है — इसे अलग-अलग आयामों (dimensions) में बाँटना। यही आयाम इस पुस्तक के अध्यायों की रीढ़ हैं — हर आयाम एक या अधिक अध्यायों में विस्तार से पढ़ाया जाएगा।

आयाम (Dimension)	प्रमुख उदाहरण	पुस्तक में अध्याय
वास्तुकला: मंदिर, दुर्ग, महल	दिलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, हवा महल, शेखावाटी हवेलियाँ	अध्याय 1
स्मारक, जलाशय एवं विरासत स्थल	बावड़ी, छतरियाँ, UNESCO स्थल, पर्यटन	अध्याय 2
चित्रकला एवं हस्तशिल्प	मेवाड़-मारवाड़ शैली, फड़, ब्लू पॉटरी, GI Tag	अध्याय 3
प्रदर्शन कला: नृत्य-नाट्य	घूमर, कालबेलिया, ख्याल, रम्मत	अध्याय 4
संगीत एवं वाद्य यंत्र	मांड गायन, रावणहत्था, लंगा-मांगणियार	अध्याय 5
भाषा एवं साहित्य	मारवाड़ी-मेवाड़ी बोली, डिंगल-पिंगल	अध्याय 6, 7
धार्मिक जीवन	संप्रदाय, संत, लोक देवता-देवियाँ	अध्याय 8, 9
सामाजिक जीवन	मेले-त्यौहार, वेशभूषा, आभूषण	अध्याय 10, 11
जनजातीय संस्कृति	भील, मीणा, गरासिया, सहरिया	अध्याय 12
व्यक्तित्व	साहित्यकार, समाज सुधारक, कलाकार	अध्याय 13



4. अध्ययन के प्रमुख स्रोत — संक्षिप्त परिचय (Sources — A Preview)

- ◆ पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources): मंदिर, दुर्ग, महल, शिलालेख, मूर्तियाँ — जैसे ओसियां मंदिर समूह, चित्तौड़गढ़ के कीर्ति व विजय स्तंभ।
- ◆ साहित्यिक स्रोत (Literary Sources): चारण साहित्य, डिंगल-पिंगल काव्य, संत-वाणी, लोकगाथाएं — पाबूजी की फड़, ढोला-मारू।
- ◆ मौखिक परंपरा (Oral Tradition): लोकगीत, लोककथाएं, भोपा-भोपी द्वारा गाई गाथाएं — पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने वाला ज्ञान।
- ◆ आधिकारिक अभिलेख: राजस्थान पर्यटन विभाग, ASI, UNESCO तथा GI रजिस्ट्री के दस्तावेज़ — वर्तमान मान्यता एवं संरक्षण की जानकारी हेतु।

इन सभी स्रोतों से प्राप्त जानकारी को आगे के अध्यायों में विस्तार से, उदाहरण व जिलेवार वर्गीकरण सहित समझाया जाएगा।

5. पुस्तक की रूपरेखा — 13 अध्याय (Book Roadmap)

यह पूरी पुस्तक 13 अध्यायों में बंटी है, जो राजस्थान की कला एवं संस्कृति को वास्तुकला से लेकर प्रमुख विभूतियों तक क्रमबद्ध ढंग से कवर करती है। नीचे दी तालिका पूरी पुस्तक का नक्शा (roadmap) है —

अ.	अध्याय का नाम (Chapter)	मुख्य फोकस (Key Focus)
1	वास्तुकला परंपरा: मंदिर, दुर्ग, महल	नागर-द्राविड़-महामारू शैली, गिरि/जल/मरु दुर्ग, महल-हवेली
2	स्मारक, जलाशय एवं विरासत स्थल	छतरियाँ, बावड़ी, UNESCO विश्व धरोहर, पर्यटन
3	चित्रकला शैलियाँ एवं हस्तशिल्प	मेवाड़-मारवाड़ शैली, फड़, पिछवाई, ब्लू पॉटरी, GI Tag
4	लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	घूमर, कालबेलिया, भवाई, ख्याल, रम्मत
5	संगीत: शास्त्रीय, लोक एवं वाद्य यंत्र	मांड गायन, रावणहत्था, अलगोज़ा, लंगा-मांगणियार
6	राजस्थानी भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य	मारवाड़ी-मेवाड़ी-ढूंढाड़ी बोली, डिंगल-पिंगल
7	लोक साहित्य, लोक कथाएँ एवं गाथाएँ	ढोला-मारू, तेजाजी गाथा, पाबूजी की फड़
8	धार्मिक जीवन: संप्रदाय एवं संत	निम्बार्क, विश्वोई, दादूपंथ, सूफी परंपरा
9	लोक देवता, लोक देवियाँ एवं धार्मिक प्रथाएँ	तेजाजी, रामदेवजी, करणी माता, भोपा परंपरा
10	मेले एवं त्यौहार	पुष्कर मेला, गणगौर, तीज, होली
11	सामाजिक जीवन: रीति-रिवाज, वेशभूषा, आभूषण	विवाह संस्कार, पगड़ी-घाघरा, बोरला-थेवा
12	जनजातियाँ एवं परंपराएँ	भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, डामोर
13	राजस्थान की प्रमुख विभूतियाँ	साहित्यकार, समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी, कलाकार

6. पुस्तक को कैसे पढ़ें — Study Strategy

- ◆ पहले कहानी (Story) पढ़ें: हर बड़े विषय की शुरुआत एक situation/कहानी से होती है — पहले उसे समझें, फिर तथ्यों में जाएं।
- ◆ हर दुर्ग/नृत्य/विभूति बॉक्स ध्यान से पढ़ें: इनमें केंद्रित जानकारी एक जगह मिलेगी — रिवीजन के समय यही बॉक्स सबसे काम आएंगे।
- ◆ हर अध्याय के अंत की keyBox रोज़ रिवीज़न में शामिल करें — यह REET, पटवारी, VDO, पुलिस, LDC सहित सभी वस्तुनिष्ठ (MCQ) परीक्षाओं के लिए सबसे उपयोगी है।
- ◆ RAS Mains के अभ्यर्थी mainsBox के आधार पर खुद 5-अंक व 10-अंक के उत्तर लिखने का अभ्यास करें, केवल पढ़ने से मेंस की तैयारी पूरी नहीं होती।
- ◆ pyqBox के प्रश्नों को समय लगाकर हल करें और गलत विकल्पों की वजह भी समझें।
- ◆ हर मंदिर/दुर्ग/मेले/जनजाति को राजस्थान के नक्शे में उसके जिले के साथ जोड़कर याद करें — जिलेवार स्मरण सबसे मजबूत तरीका है, और यह हर परीक्षा में काम आता है।

प्रतीक (Symbol)	बॉक्स का नाम (Box Name)	उपयोग (Purpose)
	मॉन्युमेंट बॉक्स (Monument Box)	हर दुर्ग/महल/मंदिर की प्रोफाइल — काल, निर्माता, स्थान, विशेषता एक ही जगह

	परफॉर्मिंग आर्ट बॉक्स (Performing Art Box)	नृत्य/नाट्य/संगीत रूप — क्षेत्र, करने वाली जाति, मुख्य विशेषताएँ
	पर्सनैलिटी बॉक्स (Personality Box)	हर विभूति की प्रोफाइल — काल, क्षेत्र, मुख्य योगदान
	एग्जाम्पल बॉक्स (Example Box)	किसी कठिन अवधारणा को उदाहरण/कहानी से सरल बनाना
	कोट बॉक्स (Quote Box)	प्रसिद्ध दोहा, लोकोक्ति या उद्धरण
	मैंस बॉक्स (Mains Box)	RAS Mains हेतु 5-अंक व 10-अंक के लिए उत्तर-लेखन कोण
	की बॉक्स (Key Box)	15-20 ऐसे तथ्य जो हर परीक्षा में बार-बार पूछे जाते हैं
	PYQ बॉक्स (PYQ Box)	पिछले वर्षों के वास्तविक प्रश्न, अभ्यास हेतु

"साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः। (जो साहित्य, संगीत एवं कला से रहित है, वह बिना पूँछ-सींग के साक्षात् पशु के समान है।)"

— महाकवि भर्तृहरि, नीतिशतक

7. लेखक की ओर से (From the Author)

लेखक नोट (Author's Note): नमस्ते साथियों! मैं ओंकार सिंह गुर्जर। एक लेखक और शिक्षक के रूप में, मेरा उद्देश्य एक ऐसी प्रामाणिक और सुलभ सामग्री तैयार करना रहा है जो कला एवं संस्कृति जैसे विस्तृत विषय की जटिलता को सरलता में बदल सके। राजस्थान की कला एवं संस्कृति केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक पहचान का दर्पण है — हर दुर्ग, हर लोकगीत और हर लोक देवता की कहानी में हमारी जड़ें छिपी हैं। मेरी कोशिश रही है कि हर स्थल, कला-रूप और परंपरा को इतनी गहनता और सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाए कि विषय की मूल आत्मा स्पष्ट हो सके। यह पुस्तक रटने के बजाय समझने पर केंद्रित है, ताकि कोई भी जिज्ञासु विद्यार्थी बिना किसी बाहरी सहायता के इस विषय की गहराई को आत्मसात कर सके। यह सामग्री RAS जैसी वर्णनात्मक परीक्षा से लेकर REET, पटवारी, VDO, पुलिस जैसी वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं तक — हर स्तर की तैयारी के लिए समान रूप से उपयोगी बनाई गई है।

मेरी कोशिश यही रही है कि हर टॉपिक इतनी सरल भाषा में लिखा जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी इसे खुद पढ़कर समझ सके — बिना किसी ट्यूशन या कोचिंग के सहारे के।

विश्वसनीयता: पिछले 8 सालों से Rajasthan GK पढ़ाने वाले सबसे Trusted Teacher — 6 लाख+ Students
| www.omkarsir.in | App- NEW INDIA NAV BHARAT NIRMAN

 विषय-सूची (Index)

1. कहानी — पत्थरों में लिखा इतिहास
2. मंदिर स्थापत्य का परिचय — मंदिर की संरचना (Anatomy of a Temple)
3. भारतीय मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ — नागर, द्राविड़, बेसर
4. राजस्थान में मंदिर निर्माण का कालक्रम एवं क्षेत्रीय उप-शैलियाँ
5. राजस्थान के प्रमुख मंदिर — प्रमुख मंदिरों की प्रोफाइल एवं संभाग/जिलेवार सूची
6. दुर्ग स्थापत्य — दुर्गों के प्रकार एवं वर्गीकरण
7. UNESCO विश्व धरोहर — राजस्थान के 6 पहाड़ी दुर्ग (Hill Forts of Rajasthan)
8. राजस्थान के अन्य प्रमुख दुर्ग — संभागवार विवरण
9. महल स्थापत्य — राजस्थान के प्रमुख महल
10. हवेली स्थापत्य — शेखावाटी की भित्तिचित्र हवेलियाँ
11. अध्याय सार (Chapter Summary)

कल्पना कीजिए — आप राजस्थान की यात्रा पर निकले हैं। सुबह आप माउंट आबू की ठंडी पहाड़ियों में दिलवाड़ा के जैन मंदिर में खड़े हैं, जहाँ संगमरमर इतना बारीक तराशा गया है कि वह कपड़े जैसा पारदर्शी लगता है। दोपहर होते-होते आप चित्तौड़गढ़ के विशाल दुर्ग की प्राचीर पर हैं, जहाँ हर पत्थर में जौहर और शौर्य की कहानी दर्ज़ है। शाम को आप जयपुर के हवा महल के सामने खड़े हैं, जहाँ 953 झरोखों से राजपरिवार की स्त्रियाँ कभी बिना दिखे शहर का जीवन देखा करती थीं। और रात होते-होते आप शेखावाटी की किसी हवेली की दीवार पर बनी रंग-बिरंगी चित्रकारी में खो जाते हैं। यही है राजस्थान की वास्तुकला — मंदिर जो आस्था बोलते हैं, दुर्ग जो शौर्य की गवाही देते हैं, महल जो वैभव दिखाते हैं, और हवेलियाँ जो व्यापार व कला के संगम की कहानी सुनाती हैं। इस अध्याय में हम इन चारों को क्रमबद्ध, गहराई से और सरल भाषा में समझेंगे — ताकि हर मंदिर, हर दुर्ग, हर महल आपके दिमाग में एक तस्वीर की तरह बस जाए।

"राजपूताना में शायद ही कोई छोटी रियासत हो जिसका अपना "थर्मोपाइले" न हो, और शायद ही कोई नगर हो जिसने अपना "लियोनिदास" पैदा न किया हो।"

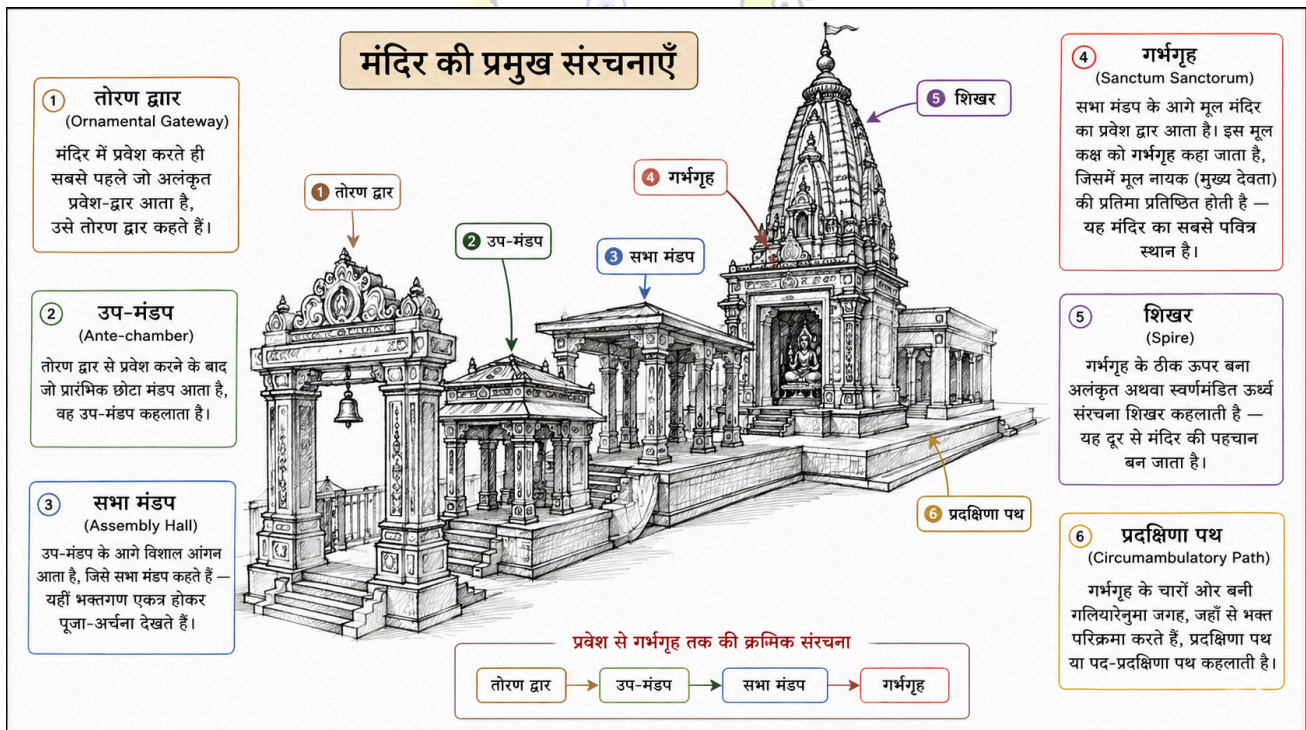
— कर्नल जेम्स टॉड, "Annals and Antiquities of Rajasthan"

1. मंदिर स्थापत्य का परिचय — मंदिर की संरचना (Anatomy of a Temple)

भारत में मंदिर निर्माण की परंपरा का सुव्यवस्थित विकास गुप्तकाल (चौथी-छठी शताब्दी ईस्वी) में हुआ। प्रारंभिक चरण में मंदिर लकड़ी और ईंट जैसी नाशवान सामग्रियों से बनाए जाते थे, किंतु कालांतर में पत्थर एवं बलुआ पत्थर जैसी टिकाऊ सामग्री का प्रयोग बढ़ता गया, जिससे मंदिर स्थायी स्मारकों का रूप लेने लगे। राजस्थान में जो मंदिर मिलते हैं, उनकी एक निश्चित संरचना (structure) होती है — मानो हर मंदिर एक ही खाके पर बना हो, बस आकार और सजावट में अंतर हो।

A. मंदिर के प्रमुख भाग (Parts of a Temple)

- ◆ **तोरण द्वार (Ornamental Gateway):** मंदिर में प्रवेश करते ही सबसे पहले जो अलंकृत प्रवेश-द्वार आता है, उसे तोरण द्वार कहते हैं।
- ◆ **उप-मंडप (Ante-chamber):** तोरण द्वार से प्रवेश करने के बाद जो प्रारंभिक छोटा मंडप आता है, वह उप-मंडप कहलाता है।
- ◆ **सभा मंडप (Assembly Hall):** उप-मंडप के आगे विशाल आंगन आता है, जिसे सभा मंडप कहते हैं — यहीं भक्तगण एकत्र होकर पूजा-अर्चना देखते हैं।
- ◆ **गर्भगृह (Sanctum Sanctorum):** सभा मंडप के आगे मूल मंदिर का प्रवेश द्वार आता है। इस मूल कक्ष को गर्भगृह कहा जाता है, जिसमें मूल नायक (मुख्य देवता) की प्रतिमा प्रतिष्ठित होती है — यह मंदिर का सबसे पवित्र स्थान है।
- ◆ **शिखर (Spire):** गर्भगृह के ठीक ऊपर बना अलंकृत अथवा स्वर्णमंडित ऊर्ध्व संरचना शिखर कहलाती है — यह दूर से मंदिर की पहचान बन जाता है।
- ◆ **प्रदक्षिणा पथ (Circumambulatory Path):** गर्भगृह के चारों ओर बनी गलियारेनुमा जगह, जहाँ से भक्त परिक्रमा करते हैं, प्रदक्षिणा पथ या पद-प्रदक्षिणा पथ कहलाती है।



💡 सोचिए — मंदिर को एक घर की तरह समझें

तोरण द्वार मुख्य गेट जैसा है, सभा मंडप बैठक कक्ष (drawing room) जैसा जहाँ सब इकट्ठा होते हैं, और गर्भगृह घर के सबसे भीतरी, सबसे निजी कक्ष जैसा — जहाँ केवल परिवार का सबसे सम्मानित सदस्य (यहाँ देवता) विराजते हैं। ऊपर बना शिखर मानो घर की छत पर सजा हुआ मुकुट है, और प्रदक्षिणा पथ वह गलियारा है जो पूरे घर का चक्कर लगाकर वापस दरवाज़े तक ले आता है। एक बार यह ढांचा समझ लें, तो आगे कोई भी मंदिर पढ़ते समय आप उसकी बनावट को तुरंत पहचान पाएंगे।

2. भारतीय मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ — नागर, द्राविड़, बेसर

भारतीय मंदिर स्थापत्य को सामान्यतः तीन प्रमुख शैलियों में वर्गीकृत किया जाता है — नागर शैली (उत्तर भारत), द्राविड़ शैली (दक्षिण भारत) और बेसर शैली (इन दोनों का मिश्रण, मध्य भारत)। राजस्थान मुख्यतः नागर शैली के प्रभाव क्षेत्र में आता है, परंतु पुष्कर के रंगनाथ जी मंदिर जैसे कुछ अपवाद द्राविड़ शैली में भी बने हैं।

बिंदु	नागर शैली (Nagara)	द्राविड़ शैली (Dravida)	बेसर शैली (Vesara)
क्षेत्र	हिमालय से विंध्याचल (उत्तर भारत)	कृष्णा नदी से कन्याकुमारी (दक्षिण भारत)	विंध्याचल से कृष्णा नदी (मध्य भारत)
मूल स्वरूप	उत्तर भारतीय शैली	दक्षिण भारतीय शैली	नागर + द्राविड़ का मिश्रण
शिखर	वक्राकार (curvilinear)	पिरामिड आकार	मिश्रित व संतुलित
गर्भगृह	चौकोर	विशाल प्रांगण के साथ	कॉम्पैक्ट संरचना
प्रमुख विशेषता	सूक्ष्म नक्काशी	विशाल परिसर, गोपुरम (प्रवेश मीनार)	सरल व संतुलित डिज़ाइन
भारत में सबसे प्राचीन उदाहरण	भीतरगांव विष्णु मंदिर (उत्तर प्रदेश)	लाडखान मंदिर, ऐहोल (कर्नाटक)	मीनाक्षी मंदिर (मदुरै), बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर)
राजस्थान में उदाहरण	सोमेश्वर मंदिर (किराड़ू), अंबिका मंदिर (जगत), दधिमाता मंदिर (नागौर), ओसियां मंदिर समूह	रंगनाथ जी मंदिर, पुष्कर (अजमेर) — अपने गोपुरम के लिए प्रसिद्ध	—

3. राजस्थान में मंदिर निर्माण का कालक्रम एवं क्षेत्रीय उप-शैलियाँ

राजस्थान में मंदिर निर्माण की परंपरा कई शताब्दियों में चरणबद्ध ढंग से विकसित हुई। हर कालखंड की अपनी विशेष शैली और अपने विशिष्ट मंदिर रहे हैं। नीचे दी गई तालिका इस पूरे विकासक्रम को एक नज़र में दिखाती है —

कालखंड	शैली/विकास	प्रमुख मंदिर
300 ईपू. – 300 ई. (मौर्य से गुप्तकाल प्रारंभ)	इस काल के मंदिर स्थापत्य के केवल अवशेष ही मिलते हैं	—
7वीं – 10वीं शताब्दी	मंदिर स्थापत्य का विकास काल — राजस्थान में मंदिर निर्माण के स्पष्ट प्रमाण मिलने लगते हैं	बाड़ौली का मंदिर, नागदा का सास-बहू मंदिर, जगत का अंबिका मंदिर (ये गुर्जर-प्रतिहार शैली में होते हुए भी उस राजवंश द्वारा नहीं बनवाए गए)

8वीं शताब्दी	क्षेत्रीय शैली का विकास — गुर्जर-प्रतिहार/महामारु शैली उदित होती है	ओसियां (सूर्य मंदिर, हरिहर मंदिर, महावीर जैन मंदिर, सच्चियाय माता मंदिर), आभावेरी (हर्षत माता मंदिर), चित्तौड़ (कालिका माता मंदिर), नागौर (दधिमाता मंदिर)
10वीं – 11वीं शताब्दी	गुर्जर-प्रतिहार शैली अपने चरमोत्कर्ष पर, साथ ही सोलंकी शैली का उदय	नीलकंठेश्वर मंदिर (जसनगर, मेड़ता), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), सोमेश्वर मंदिर किराडू (1016 ई. — गुर्जर-प्रतिहार शैली का अंतिम व सर्वश्रेष्ठ उदाहरण)
11वीं – 13वीं शताब्दी	मंदिर स्थापत्य का स्वर्णकाल — सोलंकी व मारु-गुर्जर शैली	समिधेश्वर/त्रिभुवन नारायण मंदिर (चित्तौड़ दुर्ग), दिलवाड़ा जैन मंदिर समूह (माउंट आबू)
13वीं शताब्दी के बाद	स्थापत्य में सामान्य गिरावट, बड़े मंदिरों का निर्माण घटा	जगदीश मंदिर (उदयपुर), एकलिंगजी मंदिर, केशोरायपाटन मंदिर, जगत शिरोमणि मंदिर (आमेर)
16वीं शताब्दी के बाद	धार्मिक असहिष्णुता व विध्वंस की आशंका के कारण मंदिरों को हवेली जैसा सामान्य रूप दिया जाने लगा — हवेली-मंदिर स्थापत्य का विकास	अनेक हवेलीनुमा मंदिर, विशेषकर वल्लभ संप्रदाय के मंदिर (जैसे श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा)

B. राजस्थान की प्रमुख मंदिर उप-शैलियाँ (Sub-styles)

राजस्थान के मंदिरों में गर्भगृह और सहायक देवालयों की व्यवस्था के आधार पर कुछ विशिष्ट उप-शैलियाँ विकसित हुईं। ये उप-शैलियाँ परीक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनके नाम व उदाहरण अक्सर पूछे जाते हैं।

उप-शैली	विशेषता	उदाहरण
पंचायतन शैली	एक मुख्य देवालय (प्रायः विष्णु) + चार कोनों पर चार सहायक देवालय (सूर्य, शक्ति, शिव, गणेश) तथा एक परिक्रमा पथ	हरिहर मंदिर (ओसियां) — राजस्थान में इस शैली का प्रथम उदाहरण; भंडदेवरा (बारां), बूढ़ादीत मंदिर (कोटा), जगदीश मंदिर (उदयपुर), बाड़ोली मंदिर समूह (चित्तौड़)
भूमिज शैली	नागर शैली की ही एक उपशैली, जिसमें खुला प्रदक्षिणा पथ होता है	सेवाड़ी जैन मंदिर, पाली (1010-1020 ई. — राजस्थान का सबसे प्राचीन भूमिज शैली मंदिर), उंडेश्वर मंदिर (बिजोलिया), महानालेश्वर मंदिर (मेनाल), भंडदेवरा (रामगढ़)
एकायतन शैली	मंदिर में केवल एक ही मुख्य देवता होते हैं, कोई सहायक देवालय नहीं	विभिन्न एकदेवालय मंदिर
कच्छपघाट शैली	विशाल शिखर, मेरु-मंडोवर शैली के स्तंभ, घटपल्लव व पंचशाखा द्वार-सज्जा	शांतिनाथ जैन मंदिर व पद्मनाभ मंदिर (झालरापाटन)

4. राजस्थान के प्रमुख मंदिर

राजस्थान में सैकड़ों ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मंदिर हैं। नीचे पहले सबसे अधिक परीक्षा-प्रासंगिक मंदिरों की विस्तृत प्रोफाइल दी गई है, उसके बाद शेष मंदिरों को संभाग/जिलेवार तालिकाओं में व्यवस्थित किया गया है ताकि कुछ भी छूटे नहीं।